

## प्रागज्योतिष क्षेत्र की समरसता के उन्नायक : श्रीमंत शंकरदेव

डॉ. कृष्ण गोपाल

उत्तर-पूर्वांचल का प्राचीन नाम प्रागज्योतिष है। भगवान शिव, वशिष्ठ, राम, परशुराम, कृष्ण एवं पांडवों आदि के जीवन प्रसंगों को अपने में समेटे यह क्षेत्र अपनी विविधताओं के लिए प्रसिद्ध है। सैकड़ों जनजातियों, अनेक भाषाओं तथा विविध परंपराओं वाले समूहों को एक सूत्र में आबद्ध करने का कार्य भक्तों एवं संतों ने कुशलता से यहाँ पर किया है।

पंद्रहवीं शताब्दी में, कृष्ण भक्त श्रीमंत शंकरदेव एक प्रतिभावान अवतारी पुरुष के रूप में असम में प्रकट हुए। इन्होंने जातिगत भेदभाव, बाह्य आडंबर एवं पूजा-पाठ के अनावश्यक अतिरेक को समाप्त कर दिया। श्रीमद्भागवत को आधार मानकर निर्मल कृष्ण भक्ति का संदेश दिया। भक्ति के आधार पर विकसित हुए सामाजिक ऐक्य के इस विलक्षण आंदोलन को इनके शिष्य, भक्त माधवदेव एवं दामोदरदेव ने कुशलता के साथ आगे बढ़ाया। देखते-ही-देखते हजारों नामधरों के विकास के साथ ही भगवान श्रीकृष्ण की जय-जयकार गाँव-गाँव में होने लगी। अस्पृश्यता एवं पिछड़ी कही जाने वाली अनेक जातियों को निर्मल कृष्ण भक्ति ने बराबर का अधिकार देकर एक अनोखा युग ही प्रारंभ कर दिया। सामाजिक अस्पृश्यता की अवधारणा यहाँ समाप्त हो गई।

सोलहवीं शताब्दी में चैतन्य महाप्रभु के भक्त, सगुण भक्ति के पावन संदेश को लेकर असम, मणिपुर एवं नगा भूमि की पहाड़ियों में आ पहुँचे। वैष्णव-भक्ति के उस सगुण रूप को लाखों लोगों ने हृदय से स्वीकार कर लिया। घर-घर में वृंदावन और कृष्ण मंदिर बन गए थे। मणिपुर जैसे दूरस्थ कहे जाने वाले पर्वतीय क्षेत्र में सामाजिक समरसता का यह एक सुंदर अध्याय था। अब वहाँ अस्पृश्य या शूद्र नाम से निम्न समझा जाने वाला कोई समाज नहीं था। श्री चैतन्य महाप्रभु के शिष्यों के पास एक मूलमंत्र था-

"जेई भजे सेई बडो, अभक्त हीनछार।

कृष्ण भजने नहीं जाति कुल विचार ॥"

उन्नीसवीं शताब्दी में उत्तर-पूर्वांचल के सभी क्षेत्रों में वहाँ के धार्मिक एवं सांस्कृतिक भाव वाले लोग खड़े होते गये, जिन्होंने स्थानीय संस्कृति और परंपराओं की रक्षा हेतु संघर्ष किया तथा अपनी सांस्कृतिक विरासत को देश के अंग के रूप में ही देखा। इन महापुरुषों के संदेश में सभी मनुष्यों की समानता पर बल दिया गया था। इनमें असम के श्री शंभुधन फग्लो, मेघालय के श्री तीरोत सिंह एवं जीवन राय, मणिपुर की रानी गाईदिन्ल्यू, नागा राज्य के जादोनांग तथा अरुणाचल प्रदेश की ही तालोग रूकबों एवं त्रिपुरा के स्वामी स्वरूपानंद आदि के नाम स्मरणीय हैं।

प्रागज्योतिष क्षेत्र की समरसता के उन्नायक के रूप में श्रीमंत शंकरदेव का नाम अग्रगण्य है। जब-जब देश के विविध क्षेत्रों में भारतीय समाज के सम्मुख दिशाहीनता की स्थिति पैदा हुई तब-तब उन स्थानों पर ऐसी विलक्षण विभूतियां अवतरित होती रहीं, जिन्होंने वहाँ के समाज को युगानुकूल नई दृष्टि प्रदान की और समाज को पुनः नवप्रेरणा से भर दिया। ई. पंद्रहवीं शताब्दी के ऐसे ही युगद्रष्टा एवं युग पुरुष थे असम क्षेत्र के श्रीमंत शंकरदेव ।

श्रीमंत शंकरदेव का जन्म सन् 1449 ई. में असम क्षेत्र के नगाँव जिले में हुआ था। कायस्थ (भुइयां) कुलभूषण श्री शंकरदेव के पूर्व- परिवारीजन लगभग सौ वर्ष पूर्व कन्नौज से यहाँ आकर निवास करने लगे थे। लगभग बत्तीस वर्ष की आयु में श्री शंकरदेव देश भ्रमण के लिये निकल गये। अनेक स्थानों पर धार्मिक एवं आध्यात्मिक महापुरुषों से चर्चा-वार्ता करते हुए श्री शंकरदेव ने बारह वर्षों तक तीर्थ भ्रमण किया।

असमिया समाज के लिए आध्यात्मिक गुरु महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव ने यहाँ की संस्कृति, कला, आध्यात्मिक दर्शन, साहित्य एवं आर्थिक आदि अनेक क्षेत्रों में असमिया समाज का कुशल मार्गदर्शन किया। कर्म के नाम पर सर्वत्र फैले ढोंग, आडंबर, पूजा- पाठ कर्मकांड आदि से त्रस्त समाज को उन्होंने नई दिशा प्रदान की। समाज में फैली अनेक भ्रांतियों को उन्होंने अपनी ओजस्वी वाणी एवं शास्त्र-शुद्ध चिंतनधारा से भक्ति के नन्न प्रवाह में परिवर्तित कर दिया।

पटियाला विश्वविद्यालय की पूर्व उपकुलपति (सन् 1975- 1977) श्रीमती इंद्रजीत कौर संधु लिखती हैं- "श्री शंकरदेव असम के महान विभूतिसंत, उच्चकोटि के कवि, नाटककार एवं समाज-सुधारक हुए हैं। कहा जाता है कि वे बाल्यकाल से ही आध्यात्मिक प्रवृत्ति के थे। शैशवावस्था में ही उनके माता-पिता के देहांत ने उनकी आध्यात्मिक प्रवृत्ति को और भी दृढ़ बना दिया। उनकी यह प्रवृत्ति केवल अंतर्मुखी ही नहीं रही, वरन् बहिर्मुखी हुई और समाज के प्रति प्रेरणास्रोत बनी। तत्कालीन समाज जाति- पाँति, अस्पृश्यता, अंधविश्वास आदि भ्रामक रोगों से ग्रसित था। धर्म के नाम पर कई प्रकार के अत्याचार किए जा रहे थे। कुत्सित वातावरण के कुंठित समाज के त्राण के लिए शंकरदेव ने समाज में फैले धार्मिक दंभों और अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाई। उन्होंने वर्ण-भेद और छुआ छूत का स्पष्ट शब्दों में खंडन किया तथा बहुदेववाद और मूर्तिपूजा का विरोध किया। उन्होंने बताया कि ईश्वर के दरवाजे सभी मनुष्यों के लिए खुले हैं। वे भक्तिमार्ग के प्रवर्तक थे और एकेश्वरवाद के समर्थक। उन्होंने एक नए मत का प्रचार किया जिसे 'एक शरण नाम धर्म' कहा जाता है। इस मत का मूलमंत्र है।

"एक देव एक सेव, एक बिना नाई केव।

नहि भकतित जात आचार विचार ॥"<sup>1</sup>

अर्थात् 'एक ही ईश्वर की सेवा करो। इसके अलावा कोई और नहीं है। भक्ति में जाति का कोई विचार नहीं होता।

श्री शंकरदेव सन् 1493 ई. में भारत दर्शन के बाद असम वापस आए, तब असम में पुजारियों तथा तांत्रिकों का बोल बाला था। बलि प्रथा, कर्मकांड, तंत्र-मंत्र आदि के प्रचलन के कारण सारी जनता त्रस्त थी। अनेक मत अपनी अनेक विकृतियों के साथ चरम स्थिति में थे। तांत्रिकों का केंद्र कामरूप-कामाख्या बन गया था। श्रद्धा पिंडदान जैसे कर्मकांडों में सामान्य जनता को खुलकर लूटा जाता था। श्री शंकरदेव ने इन कर्मकांडों को अस्वीकार किया। इस कारण उन्हें राजन्य वर्ग एवं पोंगापंथियों, कर्मकांडियों आदि का कोपभाजन भी बनना पड़ा। श्री शंकरदेव ने 'एक शरण नाम धर्म' का प्रचार किया और कृष्ण के प्रति भक्ति करने का आग्रह किया। उनका मानना है कि राम, हरि, वासुदेव, जनार्दन आदि हजारों नाम उसी कृष्ण के हैं। इसके अलावा अन्य देवी-देवताओं तथा पूजा-पद्धतियों को उन्होंने त्याग दिया। पूजा के स्थान पर नाम संकीर्तन का प्रचलन किया। श्री शंकरदेव ने असम में वैष्णव भक्ति को नया परिवर्तित शुद्ध स्वरूप देने का प्रयास किया। उन्होंने मूर्ति पूजा को स्वीकार नहीं किया, किंतु वे उसके खंडन के प्रयास में भी नहीं लगे। उन्होंने चार आधार बातों को मान्य किया-गुरु, देव, नाम और भक्त। 'श्रीमद्भागवत' को अपने धार्मिक विचार का आधार माना तथा भक्ति का प्रचार करते हुए दास्य भक्ति को मान्य किया। 'श्रीमद्भागवत' का सिद्धांत है कि सभी प्राणियों में एक ही ब्रह्म-ईश्वर-आत्मा के दर्शन करें। श्री शंकरदेव कहते हैं।

"कुकुर, चांडाल, गर्दभरो आत्मा राम।

जानीया सबाको परि करिबा प्रणाम।"<sup>2</sup>

अर्थात् कुत्ता, चांडाल, गधा सभी के अंदर एक ही आत्मा है, वही राम है। इसको जानकर सभी को प्रणाम करो। गोस्वामी

तुलसीदास भी यही कहते हैं-

"सीयाराम मय सब जग-जानी

करऊं प्रणाम जोरि जुग पानी।।"

श्रीकृष्ण ने भी गीता में यही दोहराया- 'आत्मवत् सर्वभूतेषु ।' श्रीमंत शंकरदेव ने जातिगत भेदभाव को कहीं कोई स्थान नहीं दिया। उनके अनुयायियों में प्रमुख श्री माधवदेव (कायस्थ), श्री दामोदर देव (ब्राह्मण), श्रीगोविंद (गारो) पूर्णानंद (कैवर्त), हरिदास (सुनार), रमाई (बोडो), श्री जयराम (भूटिया), श्री परमानंद (मिशिंग), श्री नरहरि (अहोम), श्री मुरारी तथा श्री चिलारी (कोच), श्री चांद खान (मुस्लिम) थे। श्री शंकरदेव के शिष्यों के माध्यम से अनेक जनजातियों के लाखों लोग वैष्णव- मत के अनुयायी बन गए। ये सभी शंकरदेव की शरण में आकर हरिभक्ति में लीन हो गए। श्री शंकरदेव कहते हैं कि ईश्वर भक्ति का सबको अधिकार है और इसके द्वार सभी के लिए खुले हुए हैं।

"किरात कछारी खासी गारो मिरि

यवन कंक गोवाल

असम मुल्लुक रजक (धोबाजे) तुरूक,

कोवाच म्लेच्छ चांडाल ॥

आनो पानी पर कृष्ण सेवक

भकति लभिया संसार तरिया

बैकुंठ सुखेइ चलय ॥<sup>3</sup>

अर्थात् किरात, कछारी, खासी, गारो मिरी, यवन कंक, ग्वाल, असम, मुलुक, रजक, तुर्क कोवाच (कोच), म्लेच्छ, चांडाल आदि जिन लोगों को समाज में नीच या दलित माना जाता है, वे भी कृष्ण-सेवक की संगति से पवित्र हो जाते हैं। वे भी भगवद्भक्ति प्राप्त कर इस संसार से तर कर आनंद से बैकुंठ गमन करते हैं। जाति-वर्ण आदि सभी भेदभावों से दूर श्रीमंत शंकरदेव ने सभी वर्ग के लोगों के लिए नामधरों में आकर हरिस्मरण करने की पद्धति विकसित की। उनके प्रयासों से ही ग्राम-ग्राम में बने नामधरों में वहाँ के सभी लोग एक साथ मिलकर कीर्तन करने लगे। श्री शंकरदेव कहते हैं-

"कृष्ण कथात यिटो रसिक।

ब्राह्मण जन्म तार लागे किक ॥

स्मरोक मात्र हरि दिने-राति।

न बाछे भकति जाति-अजाति ॥<sup>4</sup>

अर्थात् जो श्रीकृष्ण-कथा के श्रवण तथा कीर्तन का रसिक है। भला उसे ब्राह्मण जीवन किसलिए चाहिए। उसे तो दिन-रात केवल हरि का स्मरण करना चाहिए और समझना चाहिए कि भगवान की भक्ति जाति-अजाति का कोई विचार नहीं करती।

कुछ लोगों के मन में यह भ्रान्त धारणा बैठी थी कि चांडालों के साथ मिलकर तथाकथित उच्चवर्ग के लोगों को हरि-कीर्तन नहीं करना चाहिए, इससे उनकी जाति भ्रष्ट हो जाती है। श्री शंकरदेव ने ऐसी सभी मान्यताओं को चुनौती दी तथा कहा-

"चांडाले करिछे हरि कीर्तन।

बुलिया निदै यिटो अज्ञ-जन ॥

ताक संभाषण यिजने करै।

आजन्म पुण्य तेखने हरै ॥

विष्णु गुण-नामं अलंकृत ।

आंत्यजो यिबा करि आछे गीत ॥

ताक निंदा करै यिटो कुमति।

पुण्यक नाशि याय अधोगति ॥"<sup>5</sup>

अर्थात् चांडाल भी हरि कीर्तन कर रहा है। ऐसा कहकर जो अज्ञ-जन निंदा करता है। (वह ऐसा पापी है, जिसके कारण) उससे जो भी बातचीत करता है, उसके जीवन-भर के पुण्य तत्काल नष्ट हो जाते हैं। भगवान विष्णु के गुण नाम से अलंकृत-मंडित जो गीत अंत्यज भी गायन कर रहा है, उसकी निंदा जो दुर्मति करता है, उसके सारे पुण्य नष्ट हो जाते हैं अंत में वह अधोगति को प्राप्त करता है। डॉ. कृष्णनारायण प्रसाद 'मागध' कहते हैं कि "शंकरदेव द्वारा प्रचारित नवीन मत जाति- वर्ण आदि से ऊपर उठकर समता के सिद्धान्त पर आधारित था। उनकी घोषणा थी-"चांडाल पर्यंत कर हरि-भक्ति अधिकारी।"<sup>6</sup>

श्री शंकरदेव कहते हैं कि सभी जीवों में आत्मा है तथा सभी को भगवान विष्णु का रूप मानकर उनके प्रति श्रद्धा करनी चाहिए। उनके वाचर से समदृष्टि रखने वाला ही यथार्थ में पंडित हैं।

"ब्राह्मण चांडाल निबिचारि कुल।

दातात चोरत जार एकदृष्टि तुल ॥

नीचत साधुत यार मैल एक ज्ञान।

ताहाके से पंडित बुलिय सर्वज्ञान ॥"<sup>7</sup>

अर्थात् जो ब्राह्मण या चांडाल के अनुकूल विचार नहीं करता (दोनों को मनुष्य समझता है दाता या चोर में जिसकी दृष्टि एक समान होती है, नीच या साधु में जिसका ज्ञान एक जैसा होता है, उसे ही सर्वज्ञ पंडित कहना चाहिए।

अनेक स्थानों पर मुसलमान भी उनके शिष्य बने। श्री शंकरदेव जानते थे कि काशी में स्वामी रामानंद ने भी मुसलमानों को वैष्णव बनने की शिक्षा दी है-म्लेच्छास्ते वैष्णवाष्वारसन् रामानंद प्रभावतः। स्वामी रामानंद ने तो मुसलमानों को स्वेच्छा से वैष्णव बनने के लिए 'राम तारक मंत्र' दिया था। श्री शंकरदेव उस बात से प्रभावित हुए होंगे और उन्होंने भी असम क्षेत्र में इच्छुक मुसलमानों को भगवतशरण में लाने की परंपरा प्रारंभ की थी।

शंकरदेव जी ने नामघरों तथा सत्रों की स्थापना की, मंहगे तथा खर्चीले मंदिर बनाने के स्थान पर गाँव के लोगों की सहायता से भी बिना दीवार का, बांस के सहारे, फूस आदि से छाया हुआ नामघर ही ग्राम की सभी धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र बन गया। इस नामघर में किसी मूर्ति की स्थापना नहीं

थी। गाँव की सभी जातियों के स्त्री-पुरुष मिलकर इन नामधरों में भजन- कीर्तन आदि 'करते थे। ऐसे हजारों नामधर आज भी असम में, लोक संस्कार के कार्य में रत हैं। उन्होंने भक्ता की तरह जीवन यापन करने वाले व्यक्ति को सत्राधिकारी बनाने का चलन चलाया। सत्राधिकारी सरल, कर्मठ, जीवन जीते हैं तथा सभी जातियों से आते हैं। स्थानीय भाषा में ग्रंथ लेखन की परंपरा श्रीमंत शंकरदेव की देन है, उन्होंने रामायण तथा 'भागवत पुराण' का स्थानीय (असमिया) भाषा में अनुवाद करके प्रचार किया। धार्मिक कथानकों पर आधारित स्थानीय भाषा में नाटक लेखन तथा मंचन का कार्य भी श्री शंकरदेव ने किया। उनके द्वारा विरचित साहित्य में-भागवत (अनुवाद), रामायण, उत्तरकांड (अनुवाद), 'बरगीत', 'कीर्तन घोषा', 'हरिश्चंद्र उपाख्यान', 'कालिय दमन', 'रुक्मिणीहरण', 'पारिजात हरण', 'राम विजय' आदि प्रमुख हैं। श्री शंकरदेव ने संस्कृत में पांच सौ चौंसठ श्लोकों का ग्रंथ 'भक्ति रत्नाकर' भी संकलित किया। इस ग्रंथ को लिखने में उन्होंने बीस ग्रंथों का सहारा लिया।

श्री शंकरदेव ने यह विचार किया था कि भगवद्भक्ति की भावभूमि पर सभी को एक साथ 'वेद' मार्ग पर लाया जा सकता, इसका माध्यम स्थानीय भाषा ही हो सकती है, इस कारण उन्हें 'भागवत' तथा 'पुराणों' के प्रसंगों की रचना लोकभाषा में गायन शैली के आधार पर कीर्तन-पदों के रूप में की। भारतवर्ष के प्रति अत्यंत श्रद्धा का भाव प्रकट करते हुए श्रीमंत शंकरदेव कहते हैं-

"कोटि कोटि जन्म अंतरे जाहार आसे महापुन्य राशि।

सिषि कदाचित मनुष्य होवय

भारतवरिषे आसि ॥"<sup>8</sup>

अर्थात् जिन लोगों का करोड़ों जन्म का महान पुण्य-योग्य होता है, वे ही कदाचित भारतवर्ष की पुण्यभूमि पर जन्म लेने का भाग्य पाते हैं। श्रीमंत शंकरदेव के प्रयासों के फलस्वरूप विकसित असम के आध्यात्मिक, सामाजिक, स्वरूप को देखकर महात्मा गांधी अत्यधिक प्रभावित हुए और उनके मुँह से अनायास ही निकल पड़ा: "Assam, indeed, is fortunate, for Shankardev has, five centuries back, given to Assamese people an ideal of which is my ideal of Ram Rajya."<sup>9</sup>

श्री जे.पी. राजखोवा ने अपनी पुस्तक में सत्य ही लिखा है: "He (Shankardev) gave to Assam a new discipline of faith in a single divinity, and helped Assam to break away with a past with its complicated esoteric doctrines and unmeaning practices and gave to the people something simple and straightforward, divested of all questionable associations or implication. He was the greatest builder of Assam by bringing in purer spiritual life and although circumstances prevented his influences from being spread into other parts of India, as a religious leader he is unquestionably one of the fretted India has produced, and he deserved to be mentioned with Shankaracharya, Nujacharya, Nasavappa, Ramanand, Kabir, Chaitanya, Mira Bai, Guru Nanak and Tulsidas. He was truly the medium through whom the spiritual light of Medieval India as a whole upon the Life of Assam."<sup>10</sup>

श्री राजखोवा के अनुसार श्रीमंत शंकरदेव हरिभक्तों के लिए कल्पवृक्ष की तरह हैं। वे ही हमारे परम गुरु हैं- उनके अतिरिक्त हमारा कोई और गुरु नहीं है, नहीं है, नहीं है।

श्री कृष्णनारायण प्रसाद 'मागध' लिखते हैं, श्रीमंत शंकरदेव दार्शनिक दृष्टिकोण को अपनाकर चलने वाले भक्त कवि थे। वे अनुभूतिमार्गी थे। उनकी प्रज्ञा पैनी और प्रतिभा प्रदीप्त थी। उनके मस्तिष्क में यह स्पष्ट कल्पना थी कि समाज की दो अवस्थाएं ही संभव हैं- भक्त और विभक्त। विभक्ति चाहे धार्मिक हो या आध्यात्मिक, सामाजिक हो या सांस्कृतिक, आर्थिक हो या राजनीतिक-शांति सुख और विकास की दृष्टि से बाधक है। उनकी भक्ति निषेधात्मक क्रांति नहीं, विधायक धर्म है। उसमें निषेध की अपेक्षा विधि के तत्व अधिक हैं। उनकी कविता का मूलस्वर मानवतावादी है। 'एको छिद्र न धरंत हरि... चांडाल पर्यंत करि हरि-भक्ति अधिकारी... शत्रु-मित्र उदासीनों सबातों समान' आदि उक्तियां, उनकी ईश्वर कल्पना को साम्यभाव (अर्थात् समभाव) तक ले जाती हैं। इनमें उनका मानव प्रेम ही छलकता दिखाई देता है। मानव-मानव में साम्य-भाव की यह व्यवस्था 'कृणवंतो विशस्वमार्यम' का ही समसामयिक उद्घोष है।"<sup>11</sup>

श्रीमंत शंकरदेव की दीर्घकालीन साधना के फलस्वरूप ही आज असम में हजारों नामधरों के माध्यम से वैष्णव भक्ति, सामाजिक समरसता, संकीर्तन, कला, संगीत, आर्थिक स्वावलंबन आदि का व्यापक तथा अनुकरणीय प्रचार और विस्तार हुआ है।

## संदर्भ-

1. शंकरदेव साहित्य और विचार, डॉ. कृष्णनारायण प्रसाद 'मागध', पंजाब यूनिवर्सिटी, पटियाला-1976
2. महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव, नवारुण वर्मा, वृहत्तर फेंसी बाजार साहित्य सभा, गुवाहाटी-781001, पृ. 58
3. महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव, नवारुण वर्मा, वृहत्तर फेंसी बाजार साहित्य सभा, गुवाहाटी-781001, पृ. 49
4. महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव, नवारुण वर्मा, वृहत्तर फेंसी बाजार साहित्य सभा, गुवाहाटी-781001, पृ. 48
5. महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव, नवारुण वर्मा, वृहत्तर फेंसी बाजार साहित्य सभा, गुवाहाटी-781001, पृ. 50
6. शंकरदेव साहित्य और विचार, डॉ. कृष्णनारायण प्रसाद 'मागध', पंजाब यूनिवर्सिटी, पटियाला-9976 पृ.12
7. श्रीमंत शंकरदेव: व्यक्तित्व और कृतित्व: डॉ. भूपेन राय चौधरी, श्रीमंत शंकर संघ ददरा दलिबारी, गुवाहाटी-781014, पृ.108
8. कीर्तन घोषा, अजय कुमार दत्त, स्टूडेंट स्टोर्स, कालेज होसट रोड, गुवाहाटी-781001, 2002 अजामिल उपाख्यान कीर्ति, पृ. 4, पद-41
9. शंकरदेव साहित्य और विचार, डॉ. कृष्णनारायण प्रसाद 'मागध', पंजाब यूनिवर्सिटी, पटियाला 1976, पृ. 219

10. Shankerdev: His life, preaching & practices, J.P. Rajkhowa, Narikel Basti, Narangi Rd. Guwahati-781024, 2003 p.2.

11. शंकरदेव साहित्य और विचार, डॉ. कृष्णनारायण प्रसाद 'मागध', पंजाब यूनिवर्सिटी, पटियाला-1976 पृ.सं. 464-471.